रेवा प्रसाद द्विवेदी एवं अभिराज राजेन्द्र मिश्र के संस्कृत खण्डकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी
मंजरी यादव
एम.ए., एम.एड.
संस्कृत विभाग

शोध निर्देशिका / विभागाध्यक्ष

प्रो. (श्रीमती) अगम कुलश्रेष्ठ
संस्कृत विभाग
कला संकाय

संस्कृत विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा–282005

2020

रेवा प्रसाद द्विवेदी एवं अभिराज राजेन्द्र मिश्र के संस्कृत खण्डकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम परिष्कृत भाषा है। भारतीय मनीषियों का समस्त चिन्तन, मनन, गवेषण और विश्लेषण संस्कृत भाषा में ही है। भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक जीवन की सम्पूर्ण व्याख्या संस्कृत वाङ्मय में समाविष्ट है। अभिरामता, प्राचीनता तथा व्यापकता की दृष्टि से संस्कृत साहित्य विश्व के समस्त सभ्य साहित्यों में श्रेष्ठ है।

भारतीयों के सभी धर्म–ग्रन्थ – पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृति ग्रन्थ, दर्शन, धर्मशास्त्र आदि संस्कृत में ही हैं। संस्कृत में महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक, गद्य–काव्य की परम्परा भी अति प्राचीन है।

संस्कृत साहित्य की व्यापकता और विपुलता को देखते हुए इसे दो खण्डों में विभाजित किया गया है– वैदिक और लौकिक। लौकिक संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत श्रव्य और दृश्य काव्य आते हैं। भारतीय परम्परा में शब्द और अर्थ के साहित्य को काव्य कहा है। साहित्य से अभिप्राय है– शब्द और अर्थ का वह सम्बन्ध है जिसमें दोनों की सुन्दरता समान रूप से प्रभावशाली है। शब्द और अर्थ की सुन्दरता का यह सम्बन्ध काव्य में देखने, सुनने या पढ़ने वालों को ऐसी अनुभूति देता है, जो जीवन के सामान्य अनुभवों से भिन्न हो।

काव्य, कला का वह सर्वोत्कृष्ट रूप है, जो जीवन को सौन्दर्यात्मक एवं गत्यात्मक बनाता है, वह कला जिसमें विशिष्ट शब्दों के द्वारा परिकल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है।

काव्यादर्शकार आचार्य दण्डी के अनुसार काव्य का लक्षण निम्नवत् है–

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।। (1, 9–10)

अर्थात् इष्ट अर्थ से युक्त पदावली ही काव्य है परन्तु यह काव्य सर्वथा दोषमुक्त होना चाहिए। काव्य में थोड़ा भी दोष उपेक्षणीय नहीं है क्योंकि सुन्दर शरीर भी थोड़े कुष्ठ दोष से दुर्भग हो जाता है।

काव्यप्रकाशकार मम्मटाचार्य के अनुसार–

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। (का. 4 सू. 1)

अर्थात् दोषरहित, गुणसंहित, अलंकारयुक्त तथा कभी–कभी अलंकार रहित शब्दार्थमयी रचना को काव्य कहा है।

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ कविराज के अनुसार–

वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। (1/67)

अर्थात् रसात्मक वाक्य को काव्य कहा है।

काव्यालंकार आचार्य भामह के अनुसार–

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। (1/16)

अर्थात् अर्थानुगत शब्दों के समुदाय को काव्य कहते हैं।

संस्कृत काव्य साहित्य के दो भेद किये हैं– दृश्य और श्रव्य। श्रव्य काव्य में गद्य, पद्य और चम्पू काव्यों का समावेश किया जाता है। पद्यकाव्य के दो उपभेद किये हैं– महाकाव्य और खण्डकाव्य।

खण्डकाव्य से ही स्पष्ट होता है कि इसमें मानव जीवन की किसी एक ही घटना की प्रधानता रहती है। कवि चरितनायक के जीवन की किसी सर्वोत्कृष्ट घटना से प्रभावित होकर ही उसका अपने काव्य में पूर्णतया उद्घाटन करता है। महाकाव्य में प्रधान कथा के साथ अनेक प्रासंगिक कथायें भी जुड़ी हैं किन्तु खण्डकाव्य में केवल एक मूलभूत कथा रहती है। प्रासंगिक कथाओं को इसमें स्थान नहीं मिलता। संस्कृत साहित्य में खण्डकाव्य की एकमात्र परिभाषा विश्वनाथ कविराज के साहित्य दर्पण में उपलब्ध होती है

खंडकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च। (6/329)

तद्नुसार "काव्य के एक अंश का ही अनुसरण करने वाला खण्डकाव्य होता है।"

खण्डकाव्य एक ऐसा पद्यबद्ध काव्य है, जिसके कथानक में एकात्मक अन्विति हो, कथा में एकांगिता हो तथा कथाविन्यास क्रम में आरम्भ, विकास, चरम सीमा और निश्चित् उद्देश्य में परिणति हो

और वह आकार में लघु हो। लघुता के मापदण्ड के रूप में सर्गबद्ध प्रबन्ध काव्य को खण्डकाव्य माना जाता है।

संस्कृत में खण्डकाव्य मुक्तक और प्रबन्ध दोनों रूपों में प्राप्त होता है। प्रबन्धात्मक गीतिकाव्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण मेघदूत है। संगीतमय छन्द, मधुर पदावली गीतिकाव्यों की विशेषता है। श्रृंगार, नीति, वैराग्य और प्रकृति इसके प्रमुख प्रतिपाद्य विषय हैं। नारी के सौन्दर्य और स्वभाव का स्वाभाविक चित्रण इन काव्यों में मिलता है। उपदेश, नीति और लोकव्यवहार के सूत्र इनमें बड़े ही रमणीय ढंग से प्राप्त हो जाते हैं। यही कारण है कि मुक्तककाव्यों में सूक्तियों और सुभाषितों की प्राप्ति प्रचुरता से होती है।

संस्कृत महाकाव्यों पर हुए विविध शोधों को देखकर मेरे मन में खण्डकाव्यों के प्रति विचार उत्पन्न हुआ कि इन खण्डकाव्यों को शोध का विषय बनाया जा सकता है। इस उद्देश्य से मैंने खण्डकाव्यों से सम्बन्धित शोध ग्रन्थों का आन्वेषणिक अध्ययन प्रारम्भ किया।

मैंने प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी एवं अभिराज राजेन्द्र मिश्र के खण्डकाव्यों का अध्ययन करने के पश्चात् इन दोनों के खण्डकाव्यों के तुलनात्मक अध्ययन को अपने शोध विषय के रूप में चयनित करने का निर्णय लिया।

क) रेवा प्रसाद द्विवेदी–

रेवा प्रसाद द्विवेदी संस्कृत भाषा के प्रतिष्ठित साहित्यकार, कवि, लेखक और आलोचक हैं।

इनके द्वारा रचित एक महाकाव्य स्वातंत्र्यसंभवम् के लिए उन्हें सन् 1991 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

शोध कार्य हेतु रेवा प्रसाद द्विवेदी प्रणीत संस्कृत खण्डकाव्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है–

1. **शतपत्रम्**– यह एक खण्डकाव्य है। इसमें 115 पद्य हैं।
2. **श्रीरेवाभद्रपीठम्**– इस ग्रन्थ में कवि ने पवित्र नदी नर्मदा का वर्णन किया है जो 152 पद्यों में लिखा गया है।

3. **शकटारम्–** कवि द्वारा रचित इस खण्डकाव्य में 121 पद्य हैं। जिसमें 25 वर्षों के बाद दक्षिण अफ्रीका के लोकप्रिय नेता नेल्सन मंडेला जेल से रिहा होने का वर्णन है।

4. **मतान्तरम्–**

इसमें वर्तमान समय की सामाजिक विडम्बनाओं तथा व्यक्ति के जीवन में बदलते मूल्यों को चित्रित किया गया है। इसमें 11 पद्य हैं। कवि का कहना हैं–

हृदयस्य समाधिना विना यो,

निजधर्म वपुषैवसंपिपर्त्ति।

अयसा घटितं तदीयमन्तः–

करणं नो विभवे प्रियत्वमेति।

5. **शरभंगम्–** इस खण्डकाव्य में अध्यात्मरहस्य पर 108 पद्य लिखे जिसमें दण्डकारण्य में रहने वाले महर्षि शरभंग के चरित्र का वर्णन किया गया है।

6. **शरशय्या–** यह कृति एक ऐसा खण्डकाव्य है। जिसमें तीन काव्यों का संग्रह किया गया है–

i) सुगतो ब्रवीति ii) वृद्धकुमारी iii) शरशय्या

7. **रामपरिसंख्या–** इस ग्रन्थ में कविताओं का संग्रह तीन भागों में है। जिसकी प्रथम कविता 'रामपरिसंख्या' में 221 पद्य हैं। दूसरी में 'अहमस्म्यहमेव कालदासः' 202 पद्यों से युक्त हैं जिसमें कवि ने स्वयं को कालदास के रूप में प्रस्तुत किया हैं। तृतीय में 'अयि शकुन्तिले' 124 पद्यों से युक्त हैं। इसमें शकुन्तला को वर्णित किया है।

8. **अयि नीलनदि–** द्विवेदी जी ने अफ्रीका में स्थित नीलनदी को वर्णित करते हुए 124 पद्य रचे हैं।

9. **हरिहरावदानकाव्यम्–** इस काव्य में 261 पद्यों में कवि ने महान् सन्त स्वामी करपात्र जी के जीवनवृत्त एवं उनके सामाजिक और राजनीतिक योगदान का वर्णन किया है।

10. **रत्नस्वरूपावदान काव्यम्**– इसमें जगद्गुरू स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के जीवन वृत्त तथा उनके महत्त्वपूर्ण कार्यों का वर्णन हैं। यह 227 पद्यों में निबद्ध हैं।

ख) **अभिराज राजेन्द्र मिश्र**–

अभिराज राजेन्द्र मिश्र संस्कृत– कवि, गीतकार तथा नाटककार हैं। वे सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के उपकुलपति भी रह चुके हैं। उन्हें सन् 1988 में संस्कृत में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, भोजपुरी और अंग्रेजी में अनेक पुस्तकों की रचना की है।

शोध कार्य हेतु अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्रणीत संस्कृत खण्डकाव्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है–

1. **आर्यान्योक्तिशतक**– इस खण्डकाव्य में आर्याछन्द का अवलम्बन लेकर कवि ने आधुनिक कवियों में अन्योक्ति के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है।

2. **नवाष्टकमालिका**– 'नवाष्टकमालिका' खण्डकाव्य में मिश्र जी ने काव्यात्मक सौन्दर्य को परम शिखर तक पहुँचाया है। जहाँ वर्ण–मैत्री, शब्द, सौन्दर्य, अलंकारिक छवि, ध्वनि और व्यंजन का चमत्कार और सर्वोपरि भक्ति रस के अद्वितीय प्रवाह की छटा अवलोकनीय है।

3. **पराम्बाशतकम्**– यह शतक भगवती रुद्राणी को समर्पित मौलिक स्तोत्रकाव्य है।

4. **अभिराजसप्तशती**– इस खण्डकाव्य में देशप्रेम और राष्ट्रीयता से सम्बद्ध एक शतक लिखा गया है जिसमें हास्य और व्यंग्य का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

5. **पंचकुल्या**– इस खण्डकाव्य में विमानयात्राशतकम्, बालीप्रत्यत्यभिज्ञानशतकम्, यवसाहित्यशतकम्, देववाणीहुङ्कारशतकम्, संस्कृत–शतकम् इन पाँच शतकों का वर्णन है।

6. **कस्मै देवाय हविषा विधेम–** देवस्तुतिः, महात्मस्तुतिः, विद्वत्स्तुतिः, राजस्तुतिः, सत्पुरुष स्तुतिः और प्रकीर्णस्तुतिः इस खण्डकाव्य के प्रमुख छह शीर्षक हैं। यह खण्डकाव्य काव्य परम्परा में नवीन उन्मेष है।

7. **अरण्यानी–** अरण्यानी में मिश्र जी ने उपजाति, मालिनी, द्रुतविलम्बित आदि विविध संस्कृत छन्दों में प्रणीत कविताओं को संकलित किया है।

8. **संस्कृतशतकम्–** अभिराजराजेन्द्र मिश्र का व्यक्तिगत चिन्तन, संस्कृत की प्रासंगिकता, वैज्ञानिकता, उपादेयता के सन्दर्भ इस लघु काव्य में प्रस्तुत हुए हैं।

9. **अभिराजसहस्त्रकम्–** गुर्जरशतकम्, पाकशासनशतकम्, प्रवोधशतकम्, धरामाण्डवीयम्, हिमाचलशतकम्, भारतीपरिवेदन शतकम्, कालिदासमहोत्सवशतकम्, वैशालीशतकम्, विस्मयशतकम् और सौवास्तिकशतकम् उपर्युक्त दस शतक इस खण्डकाव्य में उल्लिखित है।

10. **मृगांकदूतम्–** यह काव्यकृति राष्ट्रीयता से परिपर्ण है।

शोध कार्य के अन्तर्गत मुझे यदि कविद्वय का कोई अन्य खण्डकाव्य उपलबध होता है तो उनका भी समावेश इसमें किया जायेगा।

इस शोध कार्य का उद्देश्य वर्तमान समाज को दो प्रमुख कवि रेवा प्रसाद द्विवेदी एवं अभिराज राजेन्द्र मिश्र के संस्कृत खण्डकाव्यों का परिज्ञान कराना है। कविद्वय के संस्कृत खण्डकाव्यों के मानक मानदण्डों का अर्वाचीन में कितना अनुसरण हो रहा है इसका उद्घाटन भी शोध के माध्यम से किया जायेगा। इन संस्कृत खण्डकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन साहित्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में किया जायेगा। संस्कृत खण्डकाव्यों में साम्य वैषम्य तथा दोनों के खण्डकाव्यों का समाज को प्रदेय इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

संस्कृत खण्डकाव्य में अब तक हुए शोध कार्यो का विवरण इस प्रकार है–

1. 'खण्डकाव्यों और महाकाव्यों में अलंकारों का अध्ययन' (1970) सगरीर, एन्टोनियो विनिमेल्स दिल्ली।
2. प्राकृत संस्कृत के खण्डकाव्यः साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन (2007) नारायण सत्य भारद्वाज, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
3. प्रो. राजेन्द्र मिश्र प्रणीत खण्डकाव्यों का अध्ययन, डॉ. रजनीरमण झा, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर।

शोध प्रबन्ध लिखते समय मुख्य रूप से तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

रेवा प्रसाद द्विवेदी एवं अभिराज राजेन्द्र मिश्र के संस्कृत खण्डकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय– खण्डकाव्य का स्वरूप, उद्भव एवं विकास

क. खण्डकाव्य का स्वरूप एवं भेद

ख. खण्डकाव्य का उद्भव एवं विकास क्रम

द्वितीय अध्याय–कविद्वय के खण्डकाव्य तथा उनका परिचय

क. रेवा प्रसाद द्विवेदी के खण्डकाव्यों का प्रतिपाद्य

ख. अभिराज राजेन्द्र मिश्र के खण्डकाव्यों का प्रतिपाद्य

तृतीय अध्याय–वस्तु एवं पात्र–योजना की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

क. वस्तुविवेचन

ख. पात्र–परिचय

चतुर्थ अध्याय– भाव–पक्ष की दृष्टि से कविद्वय के खण्डकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

क. भावाभिव्यंजना

ख. रस–निरूपण

पंचम अध्याय– कला–पक्ष की दृष्टि से कविद्वय के खण्डकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

क. भाषासौष्ठव एवं रचना शैली

ख. अलंकार–निरूपण

ग. छन्द–योजना

षष्ठम् अध्याय– कविद्वय के खण्डकाव्यों में वर्णन वैशिष्ट्य का तुलनात्मक अध्ययन

क. प्रकृतिवर्णन

ख. सौन्दर्यवर्णन

ग. लोकाभिव्यक्ति आदि।

उपसंहार– अध्ययन का निष्कर्ष एवं प्रासंगिकता

अध्येय गन्थ

लेखक– रेवा प्रसाद द्विवेदी

क्र.सं.	पुस्तक	प्रकाशन	वर्ष
1	शतपत्रम्	कालिदास संस्थान, वाराणसी	1987
2	श्रीरेवाभद्रपीठम्	कालिदास संस्थान, वाराणसी	1988
3	शकटारम्	कालिदास संस्थान, वाराणसी	2000
4	मतान्तरम्	कालिदास संस्थान, वाराणसी	2001
5	शरभंगम्	कालिदास संस्थान, वाराणसी	2001
6	शरशय्या	कालिदास संस्थान, वाराणसी	2002
7	रामपरिसंख्या	कालिदास संस्थान, वाराणसी	2008
8	अयि नील नदि	कालिदास संस्थान, वाराणसी	2009
9	हरिहरवदानकाव्यम्	कालिदास संस्थान, वाराणसी	2009
10	रत्नस्वरूपवदानकाव्य्	शंकराचार्य प्रकाशन, केदारघाट, वाराणसी	2010

लेखक– अभिराज राजेन्द्र मिश्र

क्र.सं.	पुस्तक	प्रकाशन	वर्ष
1	आर्यान्योक्तिशतकम्	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	1975
2	नवाष्टकमालिका	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	1976
3	पराम्बाशतकम्	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	1981
4	अभिराजसप्तशती	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	1987
5	पंचकुल्या	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	1993
6	कस्मै देवाय हविषा विधेम	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	1996
7	अरण्यानी	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	1999
8	संस्कृतशतकम	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	1999
9	अभिराजसहस्त्रकम्	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद	2000
10	मृगांकदूतम्	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	2003

सहायक ग्रन्थ सूची

1. श्री रामचन्द्र मिश्र, 'काव्यदर्श', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1958

2. डॉ. नगेन्द्र, 'भारतीय नाट्य साहित्य', एस.चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली, 1968

3. हीरालाल शुक्ल, 'आधुनिक संस्कृत साहित्य', रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1971

4. राधा बल्लभ त्रिपाठी, 'संस्कृत काव्यशास्त्र और काव्य परम्परा', प्रतिभा प्रकाशन, शक्ति नगर, दिल्ली, 1981

5. हरिनारायण दीक्षित, 'संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना', देववाणी परिषद् दिल्ली, 1983

6. आचार्य मम्मट, 'काव्यप्रकाश', सम्पा. विश्वेश्वर, विनोद पुस्तक मन्दिर, 1986

7. आचार्य विश्वनाथ, 'साहित्य दर्पण', मोती लाल बनारसी दास, 1987

8. डॉ. श्रीमती पुष्पा गुप्ता, 'संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास', ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1991

9. राधा बल्लभ त्रिपाठी, 'संस्कृत साहित्य बीसवीं शताब्दी', प्रतिभा प्रकाशन, शक्ति नगर, दिल्ली, 1990

10. डॉ. विनय मोहन शर्मा, 'शोध प्रविधि', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1990

11. राधा बल्लभ त्रिपाठी, 'संस्कृत साहित्य परिचय', प्रतिभा प्रकाशन, शक्ति नगर, दिल्ली,1998

12. डॉ. जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल, 'संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास', परिमल पब्लिकेशन्स, 1999

13. आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय, 'संस्कृत वाङमय का बष्हद् इतिहास', उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान (सप्तम खण्ड), 2000

14. श्री केशव मुसलगाँवकर, 'आधुनिक संस्कृत काव्य– परम्परा', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2004

15. डॉ. एस.एन. भारद्वाज, 'प्राकृत संस्कृत के खण्डकाव्य', जैन, विश्वभारती संस्थान, राजस्थान, 2012

16. डॉ. एच.एन. यादव, 'काव्यालंकार', हरीश प्रकाशन मंदिर

शब्द कोश–

1. संस्कृत हिन्दी कोश– वामन शिवराज आप्टे, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स, दिल्ली, 1996ई.
2. शब्द कल्प द्रुम– राजा राधाकान्त देव, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी, 1967 ई.
3. संस्कृत साहित्य कोश– श्री कृष्ण सोमवाल, दिल्ली संस्कृत अकादमी, 1996 ई.

संस्कृत पत्र–पत्रिकाएँ–

1.	शोध प्रभा (त्रैमासिक पत्रिका)	राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली,	1998
2.	संवित् (त्रैमासिक पत्रिका)	भारतीय विद्या भवन, मुम्बई	1982
3.	अर्वाचीन संस्कृतम् (त्रैमासिक पत्रिका)	देववाणी परिषद्, वाराणसी (उ.प्र.)	1999
4.	विश्वभाषा (त्रैमासिक पत्रिका)	विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी (उ.प्र.)	1998
5.	लोक संस्कृतम् (मासिक पत्रिका)	संस्कृत कार्यालय श्री अरविन्द आश्रम पॉण्डिचेरी	1984

Website:

1. Wikipedia.org>wiki [k.M
2. Bharatdiscovery.org>india>[k.M
3. www.ignca.nic.in
4. www.sodhganga.inflibent.ac.in